एकता के प्रयास

भारत में एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गठन के अपने घोषित केन्द्रीय कार्यभार के तहत अपने प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) ने करीब डेढ़ साल पहले तीन कम्युनिस्ट संगठनों को एकता का प्रस्ताव दिया था। ये संगठन हैं –केंद्रीय कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) सामान्य परिषद, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) और भारत की क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)। इन तीनों संगठनों की एक सामान्य विशेषता यह है कि ये 1989 तक एकीकृत भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) में अपनी विरासत तलाश सकते हैं। ये सभी संगठन भारत में समाजवादी क्रांति की मंजिल को स्वीकार करते हैं।

15 सितम्बर, 2001 के पुनर्गठन कमेटी के इस प्रस्ताव पर केन्द्रीय कमेटी ने देर से अपनी प्रतिक्रिया दी और एकता वार्ता का प्रस्ताव स्वीकार किया। उसके बाद पुनर्गठन कमेटी की केन्द्रीय कमेटी से दो दिनों की वार्ता हुयी । दोनों ही पक्षों ने वार्ता को सकारात्मक बताया और आगे वार्ता जारी रखने का निश्चय किया। दूसरे चक्र की वार्ता अभी होनी है।

सामान्य परिषद ने पुनर्गठन कमेटी के एकता प्रस्ताव का पहले नकारात्मक जवाब दिया। लेकिन पुनर्गठन कमेटी द्वारा इसके प्रत्युत्तर के बाद सामान्य परिषद एकता वार्ता के लिए तैयार हो गई। सामान्य परिषद के साथ भी पुनर्गठन कमेटी की दो दिनों की वार्ता सम्पन्न हुयी। इस वार्ता को दोनों पक्षों ने सकारात्मक बताया और आगे वार्ता जारी रखने का निश्चय किया। दूसरे चक्र की वार्ता इनके साथ भी, अभी होनी है।

भारत की क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग ने पुनर्गठन कमेटी के एकता प्रस्ताव का, कुछ नकारात्मक मौखिक टिप्पणियों के अलावा कोई जवाब नहीं दिया। इस सम्बन्ध में स्मरण–पत्र का भी उन्होंने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया है।

हम अपने इन एकता प्रयासों को देश के समस्त कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के सूचनार्थ, अपने 15 सितम्बर 2001 के एकता प्रस्ताव को इन टिप्पणियों के साथ यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

प्रिय साथियों,

भारत का क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन आज बिखराव का शिकार है। विगत शताब्दी के मध्य के बाद से ही अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर संशोधनवाद के हावी हो जाने के कारण वैश्विक और राष्ट्रीय, दोनों स्तरों पर क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आन्दोलन को धक्का लगा था। लेकिन उसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 1956–63 के दौर की महान–बहस और उसके बाद चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के प्रयोग ने और राष्ट्रीय स्तर पर नक्सलबाड़ी के किसान–उभार ने पुनः सकारात्मक दिशा में गति पैदा की और तदुपरान्त भारत में संशोधनवाद से क्रांतिकारी विच्छेद कर क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आन्दोलन पुनः क्रांतिकारी मार्ग पर अग्रसर हुआ।

लेकिन यह दुर्भाग्य ही था कि संशोधनवाद से स्पष्टतः संबंध–विच्छेद के बावजूद देश के सभी क्रांतिकारी कम्युनिस्टों को अपने में समेट कर आगे बढ़ने वाली एकीकृत क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी अस्तित्व में न आ सकी। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी–लेनिनवादी) के गठन के रुप में 1969 में हुआ एक प्रयोग भी अपनी अंतर्निहित कमजोरियों के कारण न केवल देश में पार्टी के बाहर रह गए क्रांतिकारियों को स्वयं में समेटने में असफल रहा, बल्कि इसके विपरीत यह अपनी एकता

भी बरकरार नहीं रख सकी और भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन में फूट–दर–फूट का एक दुखद सिलसिला चल पड़ा। सी.पी. आई.(एम.एल.) से बाहर रह गये हिस्से भी बिखराव के इस सिलसिले से बच नहीं सके।

हालांकि पिछले दशक में जहां एक तरफ कुछ क्रांतिकारी कम्युनिस्ट ग्रुपों में एकता के रुप में पुनर्एकीकरण की दिशा में कुछ सकारात्मक संकेत मिले हैं, वहीं कुछ ग्रुपों में बिखराव का सिलसिला जारी ही रहा है। कुल मिलाकर भारत का क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन वर्तमान स्थिति में भी एक एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण के लक्ष्य से बहुत पीछे रह गया है।

पूंजीपति वर्ग के भीतर तो स्वार्थों की टकराहट के कारण इसकी कई पार्टियों का अस्तित्व में बना रहना समझ में आता है। लेकिन सर्वहारा वर्ग के भीतर तो स्वार्थों की ऐसी टकराहट नहीं होती और सर्वहारा वर्ग के दूरगामी हित एक होने के कारण उसकी किसी देश में एक ही क्रांतिकारी पार्टी हो सकती है। और ऐसी ही एकीकृत क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी का गठन व निर्माण किसी भी कम्युनिस्ट का पहला लक्ष्य होना चाहिये।

पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) मार्क्सवाद–लेनिनवाद –माओ विचारधारा को आज की सच्ची क्रांतिकारी सर्वहारा विचारधारा के रुप में अपना मार्गदर्शक सिद्धान्त मानती है और स्वयं को भारत के क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आन्दोलन का एक अंग समझती है। भारत में सर्वहारा के हित में क्रांतिकारी संघर्ष छेड़ने के उपकरण के रूप में, एकीकृत अखिल भारतीय क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की दिशा में अपना क्षमता भर योगदान करना पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) का केन्द्रीय कार्यभार है। इस केन्द्रीय कार्यभार को अंजाम देने की प्रक्रिया के रुप में पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) क्रांतिकारी आन्दोलन के अन्य ग्रुपों से सैद्धान्तिक वाद–विवाद कर एकता प्रयास को आगे बढ़ाने और स्वयं अपने स्तर पर अपनी क्षमताभर सर्वहारा संघर्षों को आगे बढ़ाने के व्यावहारिक कार्यों को अंजाम देने की दोहरी प्रक्रिया को ही ठीक मानती है और उसे अंजाम देने के लिये प्रयासरत है।

अपने मुख–पत्र 'लाल सलाम' अंक–1 (जनवरी 2000) के संपादकीय में हमने भारतीय क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन की समस्याओं पर चर्चा करते हुए क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता प्रक्रिया के बारे में एक प्रस्ताव रखा था और उस सिलसिले में किसी भी पहल में अपनी क्षमताभर योगदान के लिये संकल्पबद्धता जाहिर की थी। इस प्रस्ताव को रखने के बाद अब तक के करीब डेढ़ वर्षों में इस दिशा में कोई भी सार्थक प्रगति नहीं हो सकी है। इसका कारण, एक तो यह है कि क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आन्दोलन के किसी भी कोने से इस दिशा में न तो हमें कोई प्रतिक्रिया मिली और न ही ऐसा कोई प्रयास हुआ जिसमें हम हिस्सेदारी कर सकते, और दूसरी तरफ यह अकेले हमारे जैसे छोटे संगठन की क्षमता के बाहर था कि समग्र क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आन्दोलन के सभी ग्रुपों के बीच सार्थक बातचीत के लिये अपने बलबूते पर कोई प्रयास कर सकें। हां! अपने स्तर पर कम्युनिस्ट आंदोलन की समस्याओं और मतभेद के बिन्दुओं पर बहस की शुरुआत करने और एक राय बनाने की ओर बढ़ने के उद्देश्य से अपने मुख–पत्र 'लाल सलाम' में हम इस विषय पर अपनी राजनीतिक अवस्थिति रखते रहे हैं।

इसी दौरान हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यदि समग्र आंदोलन की एकता के लिए प्रयास शुरु करना अभी संभव नहीं हो रहा हो, तो फिर बेहतर यही होगा कि आंदोलन के वे विभिन्न ग्रुप आपस में बातचीत शुरु करें जिनके बीच मतभेद तुलनात्मक रुप से कम हैं। इसी निष्कर्ष के अनुरुप हम अपनी पहलकदमी पर सर्वप्रथम उन क्रांतिकारी ग्रुपों से एकता की दिशा में बातचीत आगे बढ़ाने की पहलकदमी लेते हुए प्रस्ताव रख रहे हैं, जो :

– मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा को अपना मार्गदर्शक सिद्धान्त स्वीकार करते हैं ।

– भारत को मूलतः एक पूंजीवादी देश मानते हुए यहां समाजवादी क्रांति की मंजिल को स्वीकार करते हैं।

– क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के मूलतः गुप्त सांगठनिक ढांचे के सिद्धांत स्वीकार करते हैं।

– जनवादी केन्द्रीयता की सांगठनिक कार्यशैली पर कार्य करते हों और इस आधार पर जिसमें पेशेवर क्रांतिकारियों के नेतृत्व में कम से कम एक शीर्ष कमेटी कार्यरत हो। जो पार्टी–संगठन वर्तमान में इस शर्त को पूरा न करते हों उनसे हम उम्मीद करेंगे कि वह जल्द ही लेनिनवादी ढांचा गठित कर एकता की दिशा में बढ़ेंगे।

उपरोक्त शर्तें, प्रस्तावित एकता प्रयास की प्रक्रिया के लिए हमारी न्यूनतम शर्तें हैं। हम जानते हैं कि इस दायरे के भीतर आने वाले संगठनों के बीच भी–विचारधारा व कार्यक्रम के प्रश्नों पर मोटी एकता के बावजूद–गंभीर मतभेद मौजूद हैं। और इन मतभेद के मुद्दों पर हमारी भी निश्चित राय है। मतभेद के इन बिन्दुओं पर पहले ही अपनी अवस्थिति रख कर जहां हम 'बैल के आगे बैलगाड़ी बांधने' की कहावत चरितार्थ नहीं करना चाहते हैं, वहीं इनमें से किसी भी महत्वपूर्ण मुद्दे को

किनारे रखकर हम किसी अवसरवादी एकता के भी कतई पक्षधर नहीं हैं। हम हर मुद्दे पर अपनी राय रखते हुए भी खुले दिमाग से बातचीत के लिए तैयार हैं।

हम यह भी जानते हैं कि एकता की प्रक्रिया तुरत–फुरत में पूरी न होकर लम्बे वाद–विवाद के दुरुह, कठिन, उतार–चढ़ाव वाले रास्ते से गुजर कर पूरी होगी और भावी एकता के पहले एकीकृत संगठन में शामिल होने वाले अंशों के बीच न केवल विचारधारात्मक–राजनीतिक धरातल पर एकता कायम हो जानी चाहिये बल्कि उससे आगे बढ़कर इन अंशों के व्यवहारिक चरित्र व सांगठनिक कार्यशैली भी वास्तविक धरातल पर, केवल मौखिक सहमति के धरातल पर नहीं, एक जैसी हो जानी चाहिये। जाहिर है यह प्रक्रिया लम्बी चलने वाली प्रक्रिया होगी।

इसलिये हम इस प्रक्रिया को आगे चलाने के लिये ऊपर वर्णित शर्तों के दायरे के भीतर आने वाले बिरादर संगठनों के समक्ष एक Coordination Committee के गठन का प्रस्ताव रखते हैं। हमारी समझ में इस Coordination Committee में भावी एकता की दिशा में बातचीत ठीक दिशा में आगे बढ़ सके, इसके लिये निम्नलिखित तौर तरीकों पर सभी हिस्सेदार संगठनों की सहमति होनी चाहियेः

(i) Coordination Committee में विभिन्न भागीदार संगठनों के प्राधिकृत प्रतिनिधियों द्वारा रखी गई लिखित अवस्थितियां ही उन संगठनों की औपचारिक अवस्थिति मानी जायेंगी।

(ii) वार्ताओं के कार्यवृत व उस दौरान पेश की गई अवस्थितियां लिखित में तैयार की जायेंगी। अलिखित अवस्थितियों का कोई महत्व नहीं होगा। लिखित अवस्थितियों को ही वास्तविक अवस्थिति माना जायेगा।

(iii) इस एकता प्रक्रिया में शामिल संगठनों को वार्ताओं के दौर में भी अन्य मंचों पर एक दूसरे की खुली आलोचना का अधिकार होगा।

(iv) वार्ताओं के दौरान बहुपक्षीय व द्विपक्षीय, दोनों प्रकार की, बातचीत के लिये अवसर उपलब्ध होगा।

एक बार पुनः यह दोहराते हुए कि सच्ची क्रांतिकारी कम्युनिस्ट भावना के साथ, खुले दिमाग से बहस–मुबाहिसा करते हुए बिरादर संगठनों के साथ विचारधारात्मक, राजनीतिक एकता स्थापित करते हुए, सांगठनिक एकता के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में हम अपनी क्षमताभर योगदान अवश्य करेंगे, हम यह प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं।

संबन्धित बिरादर संगठनों की ओर से हमें इसकी सार्थक प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,

सचिव

पुनर्गठन कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)

दिनांकः 15 सितम्बर 2001

❑ ❑ ❑